अथ सन्धि प्रकरणम् —

Hema Gahlot
SKJ Delhi
B.A. II Yr

अच् संधि

15 इको यणचि — 6।1।77 — इकः स्थाने यण् स्यात्।

यह विधिसूत्र है। 'संहितायाम्' सूत्र का अधिकार क्षेत्र है। सूत्र के अर्थ है — यदि अच (अइउण्, ऋऌक्, एओङ्, ऐऔच्) अर्थात् स्वर वर्ण के परे इक् (इउण्, ऋऌक्) हो तो उसे का क्रमशः यण् (य्, व्, र्, ल्) हो जाता है अर्थात् इ का य्, उ का व्, ऋ कार और 'ऌ' का 'ल्' हो जाता है। यथा — सुध्री उपास्यः।

16. तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य — 1।1।66

यह परिभाषा सूत्र है। सूत्र का अर्थ है कि — यदि पद सप्तम्यन्त हो (जैसे 'अचि' — अच में) तो पूर्ववर्ती या परवर्ती वर्ण के बीच कोई व्यवधान नहीं रहता है। यथा — विधु + आदिक = विध्वादिक।

17. स्थानेऽन्तरतमः — 1।1।50

यह परिभाषा सूत्र है। इस सूत्र का अर्थ है कि षष्ठी से अन्त होनेवाले पदों के स्थान में जो आदेश होता है वह सबसे अधिक 'सदृश' होता है।

(वर्णों की 'सदृशता' या समानता' चार प्रकार की होती है — (क) स्थानकृत — जो उच्चारण स्थान 'षष्ठी' का हो वही 'आदेश' का भी होना चाहिए। यथा 'इ' के स्थान में 'य' का आदेश — दोनों का उच्चारण स्थान तालु है — इचुयशानां तालु'।

(ख) अर्थकृत — एकार्थवाची के स्थान में एकार्थवाची एवं बहुअर्थवाची के स्थान में बहुअर्थवाची आदेश होता है।

Scanned with CamScanner

(ग) प्रमाणकृत - एकमात्रिक के स्थान में एकमात्रिक एवं द्विमात्रिक के स्थान में द्विमात्रिक आदेश होता है। यथा - अदस्मै, अमुष्मै।

(घ) गुणकृत - अल्पप्राण के स्थान में अल्पप्राण और महाप्राण के स्थान में महाप्राण वर्ण आदेश होता है। यह गुण 'यत्न' को बतलाता है जो बाह्य और आभ्यन्तर दो प्रकार का है। यथा - वाग् + हरिः = वाग्घरिः। 'ह' और 'घ' दोनों का स्थान नाद, घोष और महाप्राण है।

अनेक प्रकार के सादृश्य रहने पर स्थानकृत सादृश्य बलवान होता है - यत्नानेकविधमान्तर्यं संभवति तत्र स्थानमान्तर्यं बलीयः। (काशिका)

18. अनचि च - 8।4।47 (47)

यह विधिसूत्र है। सूत्र का अर्थ है यदि स्वर के परे (अच् - यर्) 'यर्' हो तो 'यर्' प्रत्याहार के वर्ण का विकल्प से द्वित्व हो जाता है, साथ ही कोई अंश वर्ण भी उसके बाद न हो।

यथा - सुधी + उपास्यः में 'यण्' कार्य होने पर - सुध्य् + उपास्यः की स्थिति में 'ध्' को द्वित्व होने पर सुध् ध् य् उपास्यः रूप बनता है।

19. 'झलां जश् झशि' - 8।4।53।

सूत्र का अर्थ है कि 'झल्' के स्थान पर 'जश्' होता है यदि परवर्ती वर्ण झश् का ही हो। यथा - सुध् य् उपास्य ऐसा रूप बनता है - सुध् ध् य् उपास्यः का।

Contd.

Scanned with CamScanner